



कक्षा: 10 वां सामाजिक विज्ञान (अर्थशास्त्र)



एल: 3 धन और वित्तीय प्रणाली

A. वस्तुनिष्ठ उत्तर प्रकार के प्रश्न:

1. रिक्त स्थान भरें

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तुओं का विनिमय वस्तुओं के बदले होता था। _____

(ii) वस्तु विनिमय प्रणाली को मुद्रा प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। _____

(iii) मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य करती है।

(iv) मनी शब्द मोनेटा शब्द से लिया गया है। _____

(v) भारत में आरबीआई (भारतीय रिजर्व बैंक) बैंक करेंसी नोट जारी करता है।

(vi) भारत में सभी प्रकार के सिक्के और एक रुपये के नोट वित्त मंत्रालय द्वारा जारी किये जाते हैं। _____

(vii) साहूकार ऋण के अनौपचारिक या गैर-संस्थागत स्रोत हैं। _____

(viii) बैंक और सहकारी समितियाँ ऋण के औपचारिक स्रोत हैं। _____

(ix) ई-बैंकिंग में E शब्द का अर्थ इलेक्ट्रॉनिक है। _____

(x) इंटरनेट बैंकिंग आधुनिक वित्तीय प्रणाली का एक रूप है। _____

2. बहुविकल्पीय प्रश्न-

(i) ग्राहकों को किस समय अपनी मांग से पैसे निकालने की अनुमति है

जमा?

(क) कभी भी

(ख) समय समाप्ति से पहले

(ग) समय समाप्ति के बाद

(घ) कभी नहीं

उत्तर: कभी भी

(ii) निम्नलिखित में से कौन सा मुद्रा का कार्य नहीं है?

(क) विनिमय का माध्यम

(ख) मूल्य का माप

(c) मूल्य का भंडार

(घ) बचत खाता

उत्तर: बचत खाता

(iii) निम्नलिखित में से कौन सा ऋण का औपचारिक स्रोत नहीं है?

(क) राष्ट्रीयकृत बैंक

(ख) सहकारी समितियाँ

(ग) निजी बैंक

(घ) महाजन

उत्तर: महाजन

3. सत्य/असत्य प्रकार के प्रश्न -

- (i) वस्तु विनिमय प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का वस्तुओं के साथ आदान-प्रदान किया जाता था। (सत्य)
- (ii) आवश्यकताओं का दोहरा संयोग विनिमय की वस्तु विनिमय प्रणाली की एक सामान्य विशेषता है। (सत्य)
- (iii) मुद्रा विनिमय का माध्यम नहीं है। (गलत)
- (iv) यूरोप में कागजी मुद्रा का प्रचलन 13वीं शताब्दी में हुआ। (गलत)
- (v) आधुनिक मुद्रा के रूप में मुद्रा में केवल कागजी नोट ही शामिल हैं। (गलत)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न:

इन प्रश्नों का उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दिया जाना चाहिए।

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: वस्तु विनिमय प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का वस्तुओं के साथ आदान-प्रदान होता है। इसे वस्तु विनिमय भी कहते हैं।

सीसी प्रणाली यानि वस्तु के लिए वस्तु प्रणाली।

(ii) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का क्या अर्थ है?

उत्तर: इच्छाओं के दोहरे संयोग का अर्थ है कि एक व्यक्ति जो बेचना चाहता है, वही दूसरा व्यक्ति खरीदना चाहता है और इसके विपरीत।

(iii) सिक्कों के प्रचलन से पहले किस प्रकार की वस्तुओं का उपयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था?

उत्तर: सिक्कों के प्रचलन से पहले, विभिन्न प्रकार की वस्तुएं जैसे अनाज, मवेशी और औजार सेट आदि सिक्कों के रूप में प्रचलन में थे।

धन के रूप में उपयोग किया गया।

(iv) ऋण के औपचारिक स्रोत क्या हैं?

उत्तर: ऋण के औपचारिक स्रोतों में बैंक और सहकारी समितियां शामिल हैं।

(iv) ऋण के अनौपचारिक स्रोत क्या हैं?

उत्तर: ऋण के अनौपचारिक स्रोतों में साहूकार, व्यापारी, नियोक्ता, रिश्तेदार और अन्य शामिल हैं।

दोस्त।

बी. लघु उत्तरीय प्रश्न:

इन प्रश्नों का उत्तर 50-60 शब्दों में दिया जाना चाहिए।

I. वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष क्या हैं?

उत्तर: जब लोगों की ज़रूरतें बढ़ीं, तो उनके लिए अपनी वस्तुओं का दूसरे लोगों के साथ आदान-प्रदान करना मुश्किल हो गया और इस प्रकार यह विनिमय प्रणाली ज़्यादा समय तक नहीं चल पाई। वस्तु विनिमय प्रणाली की प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं:

1. वस्तु विनिमय प्रणाली में इच्छाओं का दोहरा संयोग होता है। जब कोई भी एक-दूसरे की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता ऐसी स्थिति में वस्तु विनिमय प्रणाली असफल हो गयी।

2. इसके अलावा, एक व्यक्ति को अपनी ज़रूरत के बदले में उसका उत्पाद खरीदने के लिए तैयार दूसरे व्यक्ति को ढूँढ़ने में काफी देर तक इंतज़ार करना पड़ता था। कभी-कभी इसमें काफी समय लग जाता था।

3. माल को लम्बे समय तक भण्डारित रखना संभव नहीं था क्योंकि समय बीतने के साथ उसका मूल्यहास हो सकता था।

4. माल के परिवहन में लागत की दृष्टि से बहुत सी कठिनाइयाँ आती हैं। एक वस्तु को दूसरी जगह ले जाना भी बहुत महँगा पड़ता है।

2. पैसे से आपका क्या मतलब है?

उत्तर: मुद्रा वह वस्तु है जो विनिमय माध्यम की एक सामान्य इकाई, लेखा-जोखा की इकाई और मूल्य के भंडार के रूप में कार्य करती है। 'मुद्रा' शब्द 'मोनेटा' शब्द से बना है, जो रोम की देवी 'जूनो' का दूसरा नाम है। पहले अनाज और मवेशी जैसी वस्तुएँ विनिमय माध्यम के रूप में कार्य करती थीं।

उसके बाद सोने, चाँदी, तांबे और पीतल के सिक्कों का भी मुद्रा के रूप में उपयोग किया जाने लगा। उसके बाद कागज़ की मुद्रा का आविष्कार हुआ। मुद्रा, मुद्रा का आधुनिक रूप है, जिसमें कागज़ की मुद्रा, डेबिट और क्रेडिट कार्ड (प्लास्टिक मनी) शामिल हैं। मुद्रा का एक अन्य रूप बैंकों में जमा राशि है। आजकल डिजिटल लेन-देन इलेक्ट्रॉनिक मनी या ई-मनी के रूप में भी किया जाता है।

3. मुद्रा के मुख्य कार्य क्या हैं?

उत्तर: धन विश्लेषण चार कार्यों के आधार पर किया जा सकता है -

1. विनिमय माध्यम: विनिमय का अर्थ है क्रय-विक्रय संबंधी गतिविधियाँ। जब मुद्रा का उपयोग वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने और बेचने के लिए किया जाता है, तो यह विनिमय माध्यम के रूप में कार्य करता है।

2. मूल्य का माप: मूल्य का अर्थ है कीमत। मुद्रा का उपयोग विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य या कीमत को मापने के लिए भी किया जाता है।

3. आस्थगित भुगतान का मानक: आस्थगित भुगतान का अर्थ है भविष्य में किए जाने वाले भुगतान।

धन का उपयोग उन भुगतानों के लिए भी किया जाता है जो भविष्य में किये जाने हैं।

4. मूल्य का भंडार: मुद्रा का उपयोग मूल्य के भंडार के रूप में भी किया जा सकता है। वस्तु विनिमय प्रणाली में वस्तुओं और सेवाओं की तुलना में मुद्रा का भंडारण आसान होता है।

4. मुद्रा के आधुनिक रूप क्या हैं?

उत्तर: मुद्रा को विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। मुद्रा के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं-

1. मुद्रा: मुद्रा, मुद्रा का एक आधुनिक रूप है जिसमें कागज़ के नोट और सिक्के शामिल हैं। आधुनिक मुद्रा किसी देश की सरकार द्वारा अधिकृत होती है और इसलिए इसे विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसे प्रतिनिधि मुद्रा कहते हैं।

2. बैंकों में जमा: धन का दूसरा रूप बैंकों में जमा है। उदाहरण के लिए, अपनी दैनिक ज़रूरतें पूरी करने के बाद, लोगों के पास कुछ अतिरिक्त धन बच जाता है। वे अपने नाम से बैंक खाता खोलकर उसे बैंकों में जमा करते हैं और जब उन्हें नकदी की ज़रूरत होती है, तो वे बैंक से अपना पैसा निकाल सकते हैं। इस प्रकार, लोगों की बैंक में जो भी जमा राशि होती है, उसे भी धन का ही एक रूप माना जाता है। इस प्रकार, लोगों का पैसा बैंकों में सुरक्षित रहता है और उन्हें कुछ ब्याज भी मिलता है। बैंकों में जमा दो प्रकार के होते हैं-

(i) मांग जमा: ये बैंकों में जमा की जाने वाली वे जमाएं हैं जिनमें ग्राहकों को अपना पैसा कभी भी निकालने की पूरी स्वतंत्रता होती है।

(ii) सावधि जमा: ये बैंकों में जमा की जाने वाली वे जमाएं हैं जिनमें पैसा एक निश्चित अवधि के लिए जमा किया जाता है।

5. ऋण के विभिन्न स्रोतों की व्याख्या करें।

उत्तर: ऋण का अर्थ है उधार देना। कई बार लोगों को अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ऋण की ज़रूरत होती है और इसके लिए उन्हें एक ऐसे स्रोत की ज़रूरत होती है जहाँ से उन्हें यह ऋण मिल सके। ये स्रोत दो प्रकार के होते हैं- 1. गैर-संस्थागत (अनौपचारिक) स्रोत- ऋण के अनौपचारिक स्रोत वे स्रोत हैं जो लोगों को ऋण प्रदान करते समय किसी नियम-कानून का पालन नहीं करते हैं और ऋण की शर्तें जैसे ऋण की राशि, ऋण की अवधि, ब्याज दर आदि स्वयं अपने विवेक से तय करते हैं। इसमें साहूकार, व्यापारी, नियोक्ता, रिश्तेदार और मित्र आदि शामिल हैं।

2. संस्थागत (औपचारिक) स्रोत: ऋण के औपचारिक स्रोत वे स्रोत हैं जिन्हें दिए गए ऋण की राशि, ऋण की अवधि, ली जाने वाली ब्याज दर आदि के संबंध में कुछ नियमों और विनियमों का पालन करना होता है और वे इन नियमों और विनियमों की अनदेखी नहीं कर सकते। इनमें बैंक और सहकारी समितियाँ शामिल हैं।

3. सहकारी समितियों से ऋण- ग्रामीण क्षेत्रों में सस्ते ऋण का बैंकों के अलावा सहकारी समितियाँ भी एक प्रमुख स्रोत हैं।

4. गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूह - इन समूहों के सदस्य अपनी ऋण संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने में एक-दूसरे की मदद करते हैं। एक सामान्य स्वयं सहायता समूह में 15-20 सदस्य होते हैं, जो आमतौर पर एक ही मोहल्ले के होते हैं, और नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं। सदस्य अपनी नियमित ज़रूरतों को पूरा करने के लिए छोटे-छोटे ऋण ले सकते हैं।

6. स्वयं सहायता समूह से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर: हाल के वर्षों में, लोग ऋण सुविधा प्राप्त करने के कुछ नए तरीके खोज रहे हैं और ऐसा ही एक तरीका है स्वयं सहायता समूह (SHG)। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इन समूहों के सदस्य अपनी ऋण संबंधी ज़रूरतों को पूरा करने में एक-दूसरे की मदद करते हैं। एक सामान्य SHG में 15-20 सदस्य होते हैं, जो आमतौर पर एक ही मोहल्ले के होते हैं, और नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं। सदस्य अपनी नियमित ज़रूरतों को पूरा करने के लिए समूह से छोटे-छोटे ऋण ले सकते हैं। समूह इन ऋणों पर ब्याज दर भी लेता है, लेकिन यह अभी भी साहूकारों द्वारा उनसे ली जाने वाली ब्याज दर से कम है।

7. ग्राहकों के लिए ऋण किस प्रकार उपयोगी हो सकता है?

उत्तर: ऋण प्रणाली ग्राहकों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकती है। इसके कुछ कारण इस प्रकार हैं-

1. ऋण उद्यमियों को अपनी कमाई बढ़ाने में मदद करता है, जिससे वे पहले से बेहतर स्थिति में आ जाते हैं, क्योंकि ऋण की मदद से वे नई व्यावसायिक इकाइयाँ शुरू कर सकते हैं और अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं।

2. यदि ऋण का उपयोग उत्पादक रूप से किया जाए तो इससे छोटे व्यापारियों, व्यवसायियों, उद्यमियों, छात्रों और समाज के कई प्रकार के लोगों को लाभ हो सकता है।

3. अब मकान बनाने, कार खरीदने, व्यावसायिक शिक्षा आदि के लिए बैंकों से उचित ब्याज दर और शर्तों पर ऋण उपलब्ध है।

4. समाज में मांग बढ़ाने के लिए भी ऋण लाभदायक है क्योंकि लोग इसके माध्यम से विभिन्न वस्तुएं खरीद सकते हैं।

वे बाजार से ऋण की सहायता से सामान खरीदते हैं, जिसे वे अन्यथा वहन नहीं कर सकते।

5. छात्र बैंक से शिक्षा ऋण भी ले सकते हैं और अपना करियर बना सकते हैं।

8. ई-बैंकिंग क्या है?

उत्तर: ई-बैंकिंग एक इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणाली है जो किसी बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के ग्राहकों को उस वित्तीय संस्थान की वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वित्तीय लेनदेन करने में सक्षम बनाती है। ई-बैंकिंग में एटीएम, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग आदि शामिल हैं।

ACTIVITY

क्रमांक।	देश	मुद्रा का नाम
1.	पाकिस्तान	पाकिस्तानी रुपया (PKR)
2.	बांग्लादेश	बांग्लादेशी टका (BDT)
3.	श्रीलंका	श्रीलंकाई रुपया (LKR)
4.	चीन	चीनी युआन (CNY)
5.	जापान	जापानी येन (JPY)
6.	नेपाल	नेपाली रुपया (एनपीआर)

- अपने क्षेत्र में मौजूद विभिन्न व्यवस्थाओं का पता लगाएं।
- ऋण प्रदान करने वाले लोगों के नाम बताइए।
- उधारकर्ता कौन हैं और उन्हें किस उद्देश्य के लिए ऋण की आवश्यकता है?
- ऋण की शर्तें क्या हैं?

मान लीजिए, आपके क्षेत्र में विभिन्न ऋण सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं। क्षेत्र में उपलब्ध ऋण सुविधाएँ, ऋण देने वाली संस्थाएँ और लोग-1. सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड

- बजाज फिनसर्व
- आईसीआईसीआई बैंक
- एचडीएफसी बैंक
- महिला माइक्रोफाइनेंस संस्थान
- एक्सिस बैंक
- महिंद्रा फाइनेंस

उधारकर्ता और उद्देश्य-

- सरकारी और निजी कंपनियों के कर्मचारी - अपनी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए जैसे घर का नवीनीकरण, विवाह, शिक्षा या चिकित्सा व्यय।
- स्व-नियोजित व्यक्ति - व्यक्तिगत खर्च, कार खरीदने या किसी अन्य आवश्यकता के लिए।
- किसान एवं कृषि से जुड़े लोग - कृषि के लिए नए बीज, खाद, मशीनरी खरीदने के लिए।

4. नये एवं लघु उद्योग स्थापित करना -

किसी दुकान, उद्योग या मौजूदा व्यवसाय का विस्तार करना।

5. छात्र - उच्च शिक्षा के लिए ट्यूशन फीस,

छात्रावास या विदेशी शिक्षा व्यय।

6. घर और संपत्ति उधारकर्ता - खरीदने के लिए

नया घर, ज़मीन या फ्लैट।

7. वाहन उधारकर्ता- नया या पुराना वाहन खरीदने के लिए

कार, स्कूटर या ट्रैक्टर।

8. चिकित्सा आपात स्थिति के लिए - अस्पताल के बिल या स्वास्थ्य संबंधी

खर्च आदि को पूरा करने के लिए।



ऋण की शर्तें

व्यक्तिगत ऋण गृह ऋण		कार / वाहन ऋण	शिक्षा ऋण कृषि	ऋण
उम्मीदवार की आयु 21-60 वर्ष के बीच होनी चाहिए	उम्मीदवार की आयु 21-70 वर्ष के बीच होनी चाहिए	उम्मीदवार की आयु 21-65 वर्ष के बीच होनी चाहिए	उम्मीदवार की आयु निम्न के बीच होनी चाहिए: 10-25 वर्ष की आयु।	किसान की आयु 18-65 वर्ष होनी चाहिए साल।
मासिक आय कम से कम होनी चाहिए (₹15,000- ₹25,000).	ऋण राशि 75 तक हो सकता है- 90% का संपत्ति मूल्य।	ऋण लिया जा सकता है 75 तक प्राप्त- 100% वाहन की कीमत.	7.5 लाख रुपये तक कोई जमानत नहीं। 7.5 लाख रुपये से अधिक के ऋण के लिए परिसंपत्ति या सावधि जमा संपात्तिक।	₹1.5 तक के ऋण के लिए कोई संपात्तिक नहीं लाख. अधिक राशि के लिए संपात्तिक या फसल बीमा।
ब्याज दर 10% से 24% तक हो सकती है।	ब्याज दर 7% से लेकर हो सकता है - 9%.	ब्याज दर 7% से लेकर हो सकता है - 15%.	ब्याज दर 8% से लेकर हो सकता है - 12%.	ब्याज दर 4% से लेकर - 10%.
आधार कार्ड, पैन कार्ड, आय प्रगति, आय से संबंधित दस्तावेज, दस्तावेज, नौकरी विश्वविद्यालय दस्तावेज और पहचान पत्र।	संपत्ति दस्तावेज, आय दस्तावेज और पहचान पत्र।	आय दस्तावेज, आर.सी., ड्राइविंग लाइसेंस।	छात्र की शैक्षणिक प्रवेश पत्र.	भूमि कागजात, आधार कार्ड और खेती की जानकारी।

इस प्रकार, ऋण की शर्तें ऋण के प्रकार के आधार पर भिन्न होती हैं।

नोट: उपरोक्त गतिविधियाँ केवल शिक्षकों/छात्रों के मार्गदर्शन के लिए बनाई गई हैं। शिक्षक भी अपनी समझ, सुविधानुसार और तकनीक की सहायता से इन गतिविधियों को हल/संपादित कर सकते हैं। दी गई गतिविधियों के निर्माण में तथ्यों/चित्रों/जानकारी आदि के लिए गूगल/विकिपीडिया कॉमन्स/चैट GPT स्रोतों का उपयोग किया गया है।

योगदानकर्ता: हरदेविंदर सिंह (राज्य संसाधन व्यक्ति, सामाजिक विज्ञान) एससीईआरटी, पंजाब (Social Science) SCERT, Punjab

रणजीत कौर (लेक्चरर इतिहास) जीएसएसएस स्कूल छीना बेट, गुरदासपुर और (History) GSSS School Chhina Bet, Gurdaspur and

नेहा कंसल (एसएस मिस्ट्रेस) स्कूल ऑफ एमिनेंस, लंदे के, मोगा (SS Mistress) School of Eminence, Landhe Ke, Moga